शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ-वध – काव्य

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

जिस ज्ञान के बल से अनेकों विपद-नद तरते रहे,
जिस ज्ञान के बल से सदा ही धैर्य तुम धरते रहे,
हे बुद्धिमानों के शिरोमणि! ज्ञान अब वह है कहाँ?
अवलम्ब उसका ही तुम्हें लेना उचित है फिर यहाँ।।

भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण पाण्डवों को समझाते हुए कहते हैं कि मानव जीवन में दुःख-सुख स्थिर रूप से नहीं रहते हैं। दुःख-सुख का चक्र मानव जीवन में चलते रहता है। इसी ज्ञान के कारण संसार में आशा बनी रहती है। दुःखों का अन्त होता है। मानव को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि ज्ञानी अपने ज्ञान की शक्ति के कारण ही अनेकों दुःख रूपी नदियों को तैर कर पार करते हैं। हे युधिष्ठिर इस ज्ञान के बल पर ही तुम अब तक धैर्य धारण करते रहे हो। तुम इस संसार में बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हो। वैसा ज्ञान तो संसार में किसी को भी उपलब्ध नहीं है।

अतः अब तुमको उसी ज्ञान का सहारा लेना है उचित है। इस प्रकार विलाप करना तुमको अब शोभा नहीं देता है। तुम्हें धैर्य से काम लेना है। वर्तमान समय की यही माँग तर्कसंगत है। इसलिए तुम धैर्य धारण करो और आगे की योजना बनाओ।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
ख० कु० सं० महाविद्यालय सुखसेना, पूर्णियाँ

10/4/20

"पथिक" काव्य
कवि- राम नरेश त्रिपाठी
शास्त्री द्वितीय खण्ड
अनिवार्य द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न- 'पथिक' काव्य के आधार पर प्रकृति का चित्रण करें एवं प्रयुक्त बिम्बों का वर्णन करें।

उत्तर- कवि रामनरेश त्रिपाठी प्रकृति देवी के अनन्य उपासकों में से एक हैं। इनकी सहज प्रवृतियाँ प्रकृति को प्यार किए बिना नहीं रह सकती हैं। कवि ने प्रकृति प्रेम की तन्मयता को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है- 'यह इच्छा है नदी नालों का वेश धरूँगा। गाता हुआ गीत मस्ती से पर्वत से उतरूँगा।

पथिक एक खण्डकाव्य है। खण्डकाव्य के प्रत्येक सर्ग के प्रारम्भ में प्रकृति का वर्णन किया गया है। यह काव्य का प्राचीन नियम है। कवि ने उस पुरातन नियम की रक्षा की है। 'पथिक' काव्य में प्रभात और चाँदनी रात का आकर्षक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त वन, पर्वत, नदी और समुद्र तट इत्यादि का वर्णन किया गया है। प्रो॰ कृष्ण-शंकर शुक्ल का कहना है कि 'प्रकृति चित्रण में त्रिपाठी जी अपनी ओर से कुछ नहीं मिलाते हैं। जो दृश्य जैसा है, मात्र वैसा ही अंकित कर देना इनकी विशेषता है। प्रकृति का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने में कवि काफी कुशल हैं। उदाहरणार्थ- 'यह बबूल वन सिन्धु तीर पर हरी छतरियाँ-छाये। त्रिपाठी जी के अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति का यथार्थ वर्णन बहुत कम हुआ है।

'पथिक' काव्य में त्रिपाठी जी ने प्रकृति को व्यापक दृष्टि से देखने की चेष्टा की है। कवि की पुस्तक की रचना के पीछे प्रकृति की प्रेरणा काम कर रही है। कवि ने लिखा है कि- श्री रामेश्वरम् की यात्रा में पर्वत, वन, नदी और समुद्र तट का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर मेरे मन को जो सुख प्राप्त हुआ है उसकी कुछ झलक इस "पथिक" के पद्यों में लाने का प्रयास किया है।

'पथिक' में कवि प्रकृति-चित्रण के सम्बन्ध में

शेष आगे

कहता है कि प्रकृति सदा सुन्दरी है, उसके यौवन में उतार कभी होता ही नहीं, वह चिर सुन्दरी है। इसके विपरीत नारी का सौन्दर्य क्षणिक है, नाशवान है – "प्रकृति सदा सुन्दरी, तुम्हारा यौवन अस्थिर धन।"

त्रिपाठी जी प्रकृति के सम्बन्ध में कहते हैं कि – प्रकृति में सुषुप्ति नहीं जागरण है, भावुकता नहीं सजलता है, अन्धभक्ति नहीं समर्पण है। यही कारण है कि उनकी प्रकृति किसी रहस्यमय छवि का संकेत नहीं देती है।

जहाँ प्राचीनकालीन कवियों ने प्रकृति को जड़ रूप में लिया है वहाँ त्रिपाठी जी ने उसको चेतन स्वरूप में ग्रहण किया है। उदाहरणार्थ – जब गम्भीर तम अर्द्धनिशा में जग को ढँक लेता है,

अन्तरिक्ष की छत पर तारों को छिटका देता है।

'पथिक' काव्य में कवि ने धरती के अनमोल विमल प्रभात और सामुद्रिक समीकरण के मधुर स्पर्श का मोहक और मादक चित्रण किया है। 'पथिक'-पत्नी के विषाद से युक्त मुखमण्डल का वर्णन करते हुए कवि कहता है –

घुसा विषाद कीट था कोई उसके हृदय सुमन में।

मुख-ऊपर दुःख की छाया थी संध्या-सी उपवन में।

निष्कर्षतः यह कहना समीचीन ही होगा कि कवि रामनरेश त्रिपाठी प्रकृति के भीषण रूप को स्वीकार नहीं करते हैं। कवि का कहना है कि कविता में जब प्रकृति का चित्रण हो तो कल्पना से अधिक अनुभूति की गहराई होनी चाहिए। अतः हम कह सकते हैं कि 'पथिक' काव्य में प्रकृति का बहुत ही सुन्दर चित्रण हुआ है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 10/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

दिगंत - भाग-2 उपशास्त्री
काव्य-खण्ड अ० द्वि०-पत्र -राष्ट्रभाषा हिन्दी
शीर्षक :- 'प्यारे नन्हें बेटे को'
कवि :- विनोद कुमार शुक्ल

लघु- उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. प्रश्न:- श्री विनोद कुमार शुक्ल कवि और कथाकार हैं। इनके बारें में लिखें:-

उत्तर:- श्री विनोद कुमार शुक्ल कवि और कथाकार दोनों रूप में हिन्दी जगत में प्रसिद्ध हैं। कथा की भाषा, तकनीक, रचनात्मकता एवं कथा के आधार पर इन्होंने नया प्रयोग किया है। हिन्दी उपन्यास की जड़ता और सुस्ती तोड़कर गतिशीलता प्रदान की है। इनके निम्न वर्गीय पात्रों में जीवन के प्रति अनुराग, सम्बन्ध बोध और सौन्दर्य चेतना है। पर्यावरण, प्रकृति, समाज और समय के साथ जुड़कर इनकी कविताएँ भारतीय हिन्दी साहित्य का अंग बन चुकी हैं।

2. प्रश्न:- विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं के आधार पर उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी साहित्य के अद्वितीय कवि हैं। इनकी कविताओं में निम्नवर्गीय चरित्रों का अंकन हुआ है। इनकी कविता सहज, सरल एवं बोध गम्य है। कवि के व्यक्तित्व की छाया उनकी कविताओं पर स्पष्ट दिखती है। वे एक संवेदनशील, प्रकृति- पर्यावरण से जुड़े कवि हैं। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण श्री शुक्ल जी हिन्दी के मान्य कवि कहलाते हैं।

3. प्रश्न:- बिटिया से क्या सवाल किया गया है?

शेष आगे -

उत्तर:- कवि द्वारा चिड़िया से सवाल किया जाता है- कहाँ, कहाँ लोहा है। कवि जानना चाहता है कि लोहा कहाँ-कहाँ वर्तमान है।

प्रश्न:- चिड़िया कहाँ-कहाँ लोहा पहचान जाती है?

उत्तर:- कवि के कथनानुसार चिड़िया के समक्ष में चिमटा, कलछुल, कढ़ाई, दरवाजे की सिटकनी, सदरी, पेंच, कब्जा इत्यादि में लोहा है। इसके अतिरिक्त सेफटी पिन तथा साईकिल की तार में भी लोहा पहचान पाती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 10|12|20
एसो० प्रो०, हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० कुरसेला, पूर्णियाँ